नईदुनिया

ट्रंप के राष्ट्रपति बनने से एलन मस्क को क्या फायदा होगा..?

डॉ. विश्वास तिवारी

किसी भी कारोबारी का राजनीतिक दल को चंदा देने से पहले उसका फायदा या नुकसान का आकलन करना होता है। यह बात तो नौसिखये कारोबारी को भी पता होती है। ऐसे में एलन मस्क जैसा कोई तर्जुबेदार कारोबारी राष्ट्रपति चुनाव में अपने तन-मन-धन से किसी राजनीतिक दल पर कोई बड़ा दांव लगाता है और अपने व्यवसाय से हटकर सियासत में आता है तो उसके कई मायने निकाले जा सकते है। पिछले 3 माह से टेस्ला, स्पेसएक्स और एक्स के मालिक एलन-मस्क बहुत चर्चा में रहे। उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप को जीताने के लिए भारी भरकम चंदा दिया, रैलियां की और सोशल मीडिया पर लगातार उनके पक्ष में माहौल बनाया। चुनाव से पहले उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा भी था कि 'अगर ट्रंप हार गए तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा और हो सकता है कि मैं जेल भी चला जाऊं।' अब ट्रंप के जीतने के बाद एलन मस्क को डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएन्सी यानि डीओजीई का मुखिया बनाया गया है। डीओजीई की भूमिका उन विभागों को खत्म करने या उसमें बदलाव करने की है जो समय के साथ अप्रांसगिक हो गए है। इन विभागों में शिक्षा और एफबीआई भी शामिल है। रिप्बलिकन पार्टी में यह धारण बन गई है कि विगत पांच सालों में एफबीआई डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ ही काम कर रही है। डीओजीई का लक्ष्य है कि नौकरशाही के अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाकर अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करना है। इसके अलावा वह परमाणु नियामक, घरेलू राजस्व सेवा जैसे विभागों के खर्चों में भी कमी कर सकते है। वैसे भी दुनिया के सबसे अमीर इंसान एलन मस्क की दौलत ट्रंप के जीतने के बाद लगातार बढ़ रही है। टेस्ला शेयर में आई तेजी से उनकी संपत्ति 300 अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर गई है। राष्ट्रपति चुनाव का परिणाम आने के अगले दिन ही एलन मस्क की नेटवर्थ में 2 लाख करोड़ से ज्यादा की बढ़ोतरी देखने को मिली थी। उनकी इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला का शेयर तूफानी गति से भाग रहा है। इस कंपनी के शेयर बढ़ने का एक कारण चीन भी है। ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल के दौरान चीन पर कई प्रतिबंध लगाए थे। ऐसे में अब लोगों को उम्मीद है कि इस बार ट्रंप सेल्फ ड्राइंविग चाइनीज इलेक्ट्रिक व्हीकल्स पर प्रतिबंध लगाने जैसा कोई बड़ा फैसला ले सकते है। इस बार के राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप ने जो वादे किए थे उसमें चीन से आयात होने वाले सामानों पर 60 प्रतिशत आयात शुल्क लगाना भी शामिल था। पहले कार्यकाल के दौरान भी आयात शुल्क में उन्होंने 25 प्रतिशत का इजाफा किया था।

जीत के बाद ट्रंप ने फ्लोरिडा के पाम बीच पर अपना विजयी भाषण दिया था। ट्रंप ने भाषण के दौरान मस्क को नया सितारा बताया था। ट्रंप ने कहा कि वह (एलन) एक सुपर जीनियस है और हमें ऐसे लोगों की रक्षा करनी होगी। अपने भाषण के दौरान ट्रंप ने मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के प्रयासों से अमेरिका के अंतरिक्ष क्षेत्र में आगे बढ़ाने में उनके काम की प्रशंसा की। ऐसे में ट्रंप की जीत के बाद एलन मस्क को बहुत फायदा होने वाला है। ट्रंप ने अपने भाषण में करीब 5 मिनट तक मस्क का जिक्र किया। ट्रंप ने मस्क को अद्भुत व्यक्ति बताया। ट्रंप ने कहा कि मस्क ने फिला डेल्फिया और पेंसिल्वेनिया के विभिन्न हिस्सों में चुनाव प्रचार के लिए दो हफ्ते बिताए। इससे साफ जाहिर है कि मस्क को सरकार में कोई महत्वपूर्ण जगह मिलने के अलावा और भी कई लाभ मिल सकते है। जैसे टैक्स कटौती का लाभ। ट्रंप हमेशा से ही निगमों और अमीरों के लिए कम टैक्स की वकालत करते है। अपने पहले कार्यकाल में भी उन्होंने कॉर्पोरेट टैक्स की दर 35 प्रतिशत से घटाकर 21 प्रतिशत कर दी थी और इस बार उसे 15 प्रतिशत करने का वादा उन्होंने चुनावी भाषणों में किया है। इसके अलावा मस्क की कंपनी स्पेस एक्स को भी कई तरह की छूट मिल सकती है। कंपनी को पहले ही कई सरकारी अनुबंध मिलते रहे है। ट्रंप के शासन में भी यह अनुबंध जारी रह सकते है और इनमें इजाफा भी हो सकता है।

ट्रंप ने अपने चुनावी वादों को पूरा करने के लिए जिस नए विभाग का गठन किया है उसमें भर्ती की शर्तों का जो विज्ञापन निकला है उसे मस्क की स्वमित्व वाली 'एक्स' पर निकाला गया है। इस विज्ञापन में भर्ती के लिए शिक्षा या अनुभव को नहीं बल्कि सुपर हाईआइक्यू लेवल और सप्ताह में 80 घंटों से ज्यादा कम करने की अनिवार्यता रखी गई है। चूंकि इसके आवेदन एक्स पर मांगे गये है तो इस भर्ती के लिए एक्स की प्रीमियम सदस्यता लेनी होगी जिसका शुल्क आठ डॉलर प्रतिमाह है। एक्स पर डीओजीसी का खाता खोले जाने से इसके 12 लाख फॉलोअर बन गए है।

मस्क की कंपनियों को बाइडन प्रशासन के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। इसमें प्रमुख रूप से स्पेस एक्स लांच साइट पर पर्यावरण संबंधी चिंताएं और टेस्ला के कारखाने संबंधी मुद्दे भी शामिल है। मस्क पर अमेरिका पीएसी के साथ कोर्ट में मुकदमें भी चल रहे है। इसमें इनाम के तौर पर रोजाना 10 लाख डॉलर देने का मुद्दा भी शामिल है। ट्रंप के कार्यकाल में मस्क ने अक्टूबर 2022 में टविट्र को 44 बिलियन डॉलर में खरीदा था जिसके बाद इसका नाम 'एक्स' कर दिया गया था। हालांकि इसके बाद इस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा और इसकी यूर्जस संख्या मे भी कमी आई। अब ट्रंप की जीत के बाद मस्क के इस कारोबार में भी तेजी आने की संभावनाएं है।

ट्रंप ने अपने चुनावी वादों को पूरा करने के लिए जिस नए विभाग का गठन किया है उसमें भर्ती की शर्तों का जो विज्ञापन निकला है उसे मस्क की स्वमित्व वाली 'एक्स' पर निकाला गया है। इस विज्ञापन में भर्ती के लिए शिक्षा या अनुभव को नहीं बल्कि सुपर हाईआइक्यू लेवल और सप्ताह में 80 घंटों से ज्यादा कम करने की अनिवार्यता रखी गई है। चूंकि इसके आवेदन एक्स पर मांगे गये है तो इस भर्ती के लिए एक्स की प्रीमियम सदस्यता लेनी होगी जिसका शुल्क आठ डॉलर प्रतिमाह है। एक्स पर डीओजीसी का खाता खोले जाने से इसके 12 लाख फॉलोअर बन गए है।

एलन मस्क भारत में अपने उद्योगों का विस्तार करने में लंबे समय से रूचि रखते है। डोनाल्ड ट्रंप के हमेशा ही व्यापार अनुकूल रूख के कारण वह अपनी महत्वकांक्षाओं को नई गति दे सकते है। ट्रंप की व्हाइट हाउस में वापसी हमेशा से ही अरबपति व्यावसायिओं के लिए लाभ लेकर आती है। ट्रंप के साथ अपने संबंधों के चलते टेस्ला और स्टारलिंक के लिए विनियामक चुनौतियों पर काबू पाने के लिए उन्हें समर्थन मिल सकता है। एलन मस्क ने अपने इलेक्ट्रिक वाहन और सैटेलाइट ब्रॉड बैठक कारोबार में भारतीय बाजार में दिलचस्पी दिखाई है। हालांकि नियामक बाधाओं ने भारत में उनके प्रवेश को धीमा कर दिया है। अब ट्रंप के आने से उन्हें अमेरिकी प्रशासन से बेहतर समर्थन मिल सकता है, जिससे भारतीय बाजार में उनका प्रवेश आसान हो सकता है। भारत में मस्क की प्रमुख रूचियों में से एक है उनकी सैटेलाइट इंटरनेट सेवा स्टारलिक हो लांच करना है। इसका उद्देश्य सैटैलाइट समूह के माध्यम से हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड प्रदान करना है। इसमें मस्क भारत से कम स्पैक्ट्रम शुल्क और प्रशासनिक सैटेलाइट स्पेक्ट्रम के आवंटन की मांग कर रहे है। उनकी इस मांग का भारतीय दिग्गज कंपनियां रिलांयस जियो और भारती एयरटेल द्वारा विरोध किया जा रहा है। ये कंपनिया स्पैक्ट्रम आवंटित करने के लिए नीलामी मॉडल की मांग कर रही है जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा बनी रहे। ट्रंप के समर्थन और डोनाल्ड ट्रंप और नरेन्द्र मोदी के दोस्ती भरे रिश्ते भारत में मस्क को ब्रॉड बैंड बाजार में प्रवेश दिला सकते है।

अभी तो ट्रंप के चलते मस्क की चांदी ही चांदी है, परंतु देखना यह है कि यह मित्रता कब तक चलेगी? ट्रंप भी अपनी सुर्खियां किसी और के साथ साझा करना पसंद नहीं करते है। डोनाल्ड ट्रंप और एलन मस्क दोनों ही अस्थिर दिमाग के है और दोनों ही हर काम में नफे नुकसान का आकलन करते है।

राष्ट्रीय अस्मिता, सभ्यता, संस्कृति का संवर्द्धन आवश्यक

हृदयनारायण दीक्षित

संविधान भारत का राजधर्म है। भारतीय संविधान सभा की आखिरी बैठक (26 नवंबर, 1949) में डॉक्टर आम्बेडकर के प्रस्ताव पर मतदान हुआ और संविधान पारित हो गया। संविधान ही राष्ट्र का धारक और राज्य व्यवस्था का धर्म बना। भारत में संविधान ही सर्वोत्तम सत्ता है। हम भारत के लोगों को वाक्स्वातंत्र्य और विधि के समक्ष समता सहित सभी मौलिक अधिकार संविधान से मिले। जन गण मन ने स्वाभाविक ही समता, समरसता और संपन्नता के रंगीन सपने देखे। जन गण मन का भाग्य विधाता संविधान है। नागरिक संविधान के प्रति श्रद्धालु हैं। संविधान 26 नवम्बर 1949 के दिन बनकर तैयार हुआ। कृतज्ञ राष्ट्र 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाता है। दो दिन बाद संविधान दिवस है।

संविधान ही राष्ट्र जीवन का मुख्य धारक होता है। भूमि, जन और संप्रभु शासन से ही राष्ट्र नहीं बनते। इनसे नेशन बनते हैं और नेशन व राष्ट्र में बड़ा अंतर है। राष्ट्र का आधार संस्कृति है। संविधान निर्माता सांस्कृतिक क्षमता से परिचित थे। इसलिए संविधान की हस्तलिखित प्रति में सांस्कृतिक राष्ट्रभाव वाले 23 चित्र हैं। मुख पृष्ठ पर राम और कृष्ण हैं। भाग 1 में सिन्धु सभ्यता की स्मृति वाले मोहनजोदड़ो काल की मोहरों के चित्र और भाग 2 नागरिकता वाले अंश में वैदिक काल के गुरुकुल आश्रम का दिव्य चित्र। भाग तीन मौलिक अधिकार वाले पृष्ठ पर श्रीराम की लंका विजय व भाग चार में राज्य के नीति निदेशक तत्वों वाले पन्नों पर कृष्ण अर्जुन उपदेश वाले चित्र थे। भाग 5 में महात्मा बुद्ध, भाग 6 में स्वामी महावीर और भाग 7 में सम्राट अशोक। भाग 8 में गुप्त काल, भाग 9 में विक्रमादित्य, भाग 10 में नालंदा विश्वविद्यालय, भाग 11 में उड़ीसा का स्थापत्य, भाग 12 में नटराज, भाग 13 में भागीरथ द्वारा गंगा अवतरण, भाग 14 में मुगलकालीन स्थापत्य, भाग 15 में शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह, भाग 16 में महारानी लक्ष्मीबाई, भाग 17 व 18 में क्रमशः गांधी जी की दांडी यात्रा व नोआखली दंगों में शांति मार्च, भाग 19 में नेताजी सुभाष, भाग 20 में हिमालय, भाग 21 में रेगिस्तानी क्षेत्र व भाग 23 में लहराते हिन्द महासागर की चित्रावली आनंदित करती है।

संविधान पारण के बाद अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद ने कहा, अब सदस्यों को संविधान की प्रतियों पर हस्ताक्षर करने हैं। एक हस्तलिखित अंग्रेजी की प्रति है, इस पर कलाकारों ने चित्र अंकित किए हैं, दूसरी छपी हुई अंग्रेजी व तीसरी हस्तलिखित हिंदी की। (संविधान सभा कार्यवाही खण्ड 12, पृष्ठ 4261) चित्रमय प्रति दर्शनीय है। संस्कृति और इतिहास के छात्र संविधान की चित्रमय प्रति से प्रेरित होते हैं। राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा के आखिरी भाषण (26.11.1949) में कहा, संविधान किसी बात के लिए उपबंध करे या न करे, देश का कल्याण उन व्यक्तियों पर निर्भर करेगा, जो देश पर शासन करेंगे। आखिरी भाषण में डॉक्टर आम्बेडकर ने प्राचीन परंपरा की याद दिलाते हुए कहा, एक समय भारत गणराज्यों से सुसज्जित था। यह बात नहीं है कि भारत पहले संसदीय प्रक्रिया से अपरिचित था। डॉ. आम्बेडकर ने राष्ट्र शब्द पर काफी जोर दिया। अमेरिकी कथा सुनाई, अमेरिकी प्रोटेस्टेंट गिरिजाघर ने पूरे देश के लिए प्रार्थना प्रस्तावित की कि 'हे ईश्वर हमारे राष्ट्र को आशीर्वाद दो'। अमेरिकी जनता ने आपत्तियां दर्ज की।

अमेरिका राष्ट्र नहीं था। प्रार्थना संशोधित हुई, हे ईश्वर इन संयुक्त राज्यों को आशीर्वाद दो। यहाँ (भारत) जातियां हैं। राष्ट्र के रूप में होने के लिए हमें इन पर विजय प्राप्त करना है। उन्होंने कहा, मेरा मस्तिष्क भविष्य चिन्ता से परिपूर्ण है। क्या भारत अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने में कामयाब होगा? जाति और मत मतान्तर राजनैतिक पक्ष बन रहे हैं। क्या भारतीय मत मतान्तरों को राष्ट्र से श्रेष्ठ मानेंगे या राष्ट्र को मत मतान्तरों से ऊपर? उन्होंने आर्य आक्रमण की कथा को झूठ बताया। दुनिया के अन्य विद्वानों की तरह उन्होंने भी ऋग्वेद को आधार बनाया। उपनिषद जांचे, ब्राह्मण ग्रन्थ पढ़े, महाभारत पढ़ा। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' जांचा। आर्य-अनार्य और ब्राह्मण-शूद्र जैसे विभाजक शब्दों को जांचते हुए उन्होंने 'हू वर शूद्राज' (शूद्र कौन थे) लिखी। यूरोपीय विद्वान आर्यों को बाहर से आई नस्ल मानते थे। डॉ0 आम्बेडकर ने ऋग्वेद के हवाले बताया, ये शब्द नस्ल के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुए। (डॉ. आम्बेडकर राइटिंग्स एन्ड स्पीचेज, खण्ड 7, पृष्ठ 70) फिर आर्यों के मूल स्थान के बारे में कहा, भारत से बाहर आर्यों के मूल स्थान का सिद्धांत वैदिक साहित्य से मेल नहीं खाता। वेदों में गंगा, यमुना, सरस्वती के प्रति आत्मीय भाव है। कोई विदेशी इस तरह नदियों के प्रति आत्मस्नेह संबोधन नहीं कर सकता। (वही) उन्होंने दासों और आर्यों को एक ही राष्ट्र परिवार का अंग बताते हुए ऋग्वेद के एक मंत्र का हवाला दिया, इन्द्र ने अपनी शक्ति से दासों को आर्य बनाया। यहां वैदिक काल से ही एक परिपूर्ण गणव्यवस्था थी। गणेश गणपति थे। ऋग्वेद में गणानां त्वां गणपतिं आया है। मार्क्सवादी चिन्तक डॉक्टर रामविलास शर्मा ने लिखा, गण पुराना शब्द है, यह पुरानी समाज व्यवस्था का द्योतक है। गण और जन ऋग्वेद में पारिभाषिक हो गए हैं। महाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर ने भीष्म से आदर्श गणतंत्र पूछा। भीष्म ने (शांति पर्व 107.14) बताया कि भेदभाव से ही गण नष्ट होते हैं। उन्हें संघबद्ध रहना चाहिए। गण के लिए बाहरी की तुलना में आंतरिक संकट बड़ा होता है। आभ्यन्तरं रक्ष्यम्सा बाह्यातो भयम वाह्य उतना बड़ा नहीं।

भारतीय गणतंत्र अमर है लेकिन राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है। न्यायपालिका संविधान की जिम्मेदार संरक्षक है। न्यायपीठ ने प्रशंसनीय फैसले किए हैं। अदालतों में लंबित लाखों मुकदमें न्याय में देरी से अन्याय के सिद्धांत की गिरफ्त में हैं। अनुच्छेद 19 अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य देता है। अनुच्छेद 20 अन्य बातों के अलावा, किसी अपराध के लिए किसी व्यक्ति को अपने ही विरुद्ध गवाही देने के लिए बाध्य करने से रोकता है। अनुच्छेद 21 जीवन का अधिकार है। सर्वोच्च न्यायालय ने एक वाद में न्यूनतम जीविका एवं आश्रय के साथ-साथ मानवीय सम्मान, आदर को भी इस अधिकार का हिस्सा बताया है।मौलिक अधिकारों पर भारत को गर्व है। संविधान दिवस स्मरणीय है। प्रेरक है। इसके बाद गणतंत्र दिवस 26 जनवरी का राष्ट्रीय महोत्सव।

कृषि, विकास, गोवंश संवर्द्धन राज्य के नीति निदेशक संवैधानिक तत्व हैं। महाभारतकार ने गणतंत्र की सभा समिति (संसदीय व्यवस्था) के सदस्य की अनिवार्य योग्यता बताई, न नः स समितिं गच्छेत यश्च नो निर्वपेत्कृषिम जो खेती नहीं करता वह सभा में प्रवेश न करे। ऋग्वैदिक काल में ऋषि भी कृषि कार्य करते थे। धर्मांतरण के विरुद्ध सरकार सक्रिय है। कॉमन सिविल कोड नीति निदेशक तत्व है। इसे लागू कराना आवश्यक है। संविधान निर्माताओं ने जम्मू-कश्मीर विषयक अनुच्छेद 370 को अस्थाई बनाया था। इसकी समाप्ति का तरीका भी उन्होंने लिख दिया था। मतदान पवित्र अनुष्ठान है। यह भारतीय नागरिक का अधिकार है। हिन्दुत्व इस देश का प्राणतत्व है, लेकिन सांप्रदायिक है। अलगाववादी और द्विराष्ट्रवादी देशतोड़क हैं तो भी सेकुलर हैं। अल्पसंख्यकवाद राष्ट्र के लिए क्षतिकारक है। संविधान और कानून में अल्पसंख्यक शब्द की परिभाषा नहीं है। राष्ट्रीय अस्मिता, सभ्यता, संस्कृति का संवर्द्धन आवश्यक है।

संविधान ही राष्ट्र जीवन का मुख्य धारक होता है। भूमि, जन और संप्रभु शासन से ही राष्ट्र नहीं बनते। इनसे नेशन बनते हैं और नेशन व राष्ट्र में बड़ा अंतर है। राष्ट्र का आधार संस्कृति है। संविधान निर्माता सांस्कृतिक क्षमता से परिचित थे। इसलिए संविधान की हस्तलिखित प्रति में सांस्कृतिक राष्ट्रभाव वाले 23 चित्र हैं। मुख पृष्ठ पर राम और कृष्ण हैं। भाग 1 में सिन्धु सभ्यता की स्मृति वाले मोहनजोदड़ो काल की मोहरों के चित्र और भाग 2 नागरिकता वाले अंश में वैदिक काल का गुरुकुल आश्रम का दिव्य चित्र। भाग तीन मौलिक अधिकार वाले पृष्ठ पर श्रीराम की लंका विजय व भाग चार में राज्य के नीति निदेशक तत्वों वाले पन्नों पर कृष्ण अर्जुन उपदेश वाले चित्र थे। भाग 5 में महात्मा बुद्ध, भाग 6 में स्वामी महावीर और भाग 7 में सम्राट अशोक। भाग 8 में गुप्त काल, भाग 9 में विक्रमादित्य, भाग 10 में नालंदा विश्वविद्यालय, भाग 11 में उड़ीसा का स्थापत्य, भाग 12 में नटराज, भाग 13 में भागीरथ द्वारा गंगा अवतरण, भाग 14 में मुगलकालीन स्थापत्य, भाग 15 में शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह, भाग 16 में महारानी लक्ष्मीबाई, भाग 17 व 18 में क्रमशः गांधी जी की दांडी यात्रा व नोआखली दंगों में शांति मार्च, भाग 19 में नेताजी सुभाष, भाग 20 में हिमालय, भाग 21 में रेगिस्तानी क्षेत्र व भाग 23 में लहराते हिन्द महासागर की चित्रावली आनंदित करती है।

जन स्वास्थ्य पर सुपरबग का घातक संकट

राजेश भाटिया

सौ साल से भी कम समय पहले, एंटीबायोटिक्स की खोज ने एक ऐसे युग की शुरुआत की जिसने चिकित्सा की दुनिया को बदल दिया। इसने लाखों लोगों की जान बचाई, जटिल सर्जरी के विकास और उपयोग में तेज़ी लाई और कैंसर जैसी बीमारियों के बेहतर प्रबंधन में मदद की। सर्वव्यापी जीवाणुओं को नष्ट करने की एंटीबायोटिक्स की क्षमता ने उन्हें 'जादुई गोलियों' की उपाधि दी। दुर्भाग्य से, यह उत्साह लंबे समय तक नहीं टिका। मनुष्यों ने रोगाणुओं की जीवटता और जीवित रहने की चतुराई को कम करके आंका क्योंकि उन्होंने एंटीबायोटिक्स के प्रभाव को बेअसर करने के लिए अपनी खुद की प्रतिरोधकता विकसित कर ली। इसके बूते रोगाणु एंटीबायोटिक्स के असर से बच निकलने के काबिल बन गए, जिसे तकनीकी रूप से एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टेंस (एएमआर) कहा जाता है।

दरअसल, मानव स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा सेवाओं और कृषि में एंटीबायोटिक्स के अंधाधुंध उपयोग ने कुछ रोगाणुओं की ऐसी जमात बना दी जिस पर एक या कई एंटीबायोटिक्स का कोई असर नहीं हो पा रहा। कुछेक ने तो लगभग सभी किफायती एंटीबायोटिक्स के प्रति प्रतिरोध विकसित कर लिया है। इन्हें 'सुपरबग्स' के नाम से जाना जाता है। प्रतिरोध विकसित कर चुके रोगाणुओं से होने वाले संक्रमण का इलाज करना मुश्किल होता है, इससे अस्पताल में लंबे समय तक रहना पड़ता है, मृत्यु दर और रुग्णता बढ़ती है। आर्थिक नुकसान भी होता है। यह चुनौती पूरी दुनिया को प्रभावित कर रही है। वैश्विक स्तर पर एएमआर के निहितार्थ बहुत बड़े हैं, जो मानव विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। एएमआर पर बरती निष्क्रियता के चलते अनुमान है कि यदि कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई तो 2050 तक लगभग 1 करोड़ लोग हर साल एंटीबायोटिक्स के विरुद्ध पनपे प्रतिरोधी रोगाणुओं के कारण होने वाली बीमारियों से मर जाएंगे। यह संख्या सड़क दुर्घटनाओं और कैंसर से मरने वालों की कुल संख्या से भी अधिक होगी। इस कालखंड में, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 3.5 प्रतिशत की कमी आएगी। इससे 100 ट्रिलियन डॉलर का सकल वित्तीय नुकसान होने का अनुमान है। पशुधन उत्पादन में 7.5 प्रतिशत की कमी आएगी, जिससे वैश्विक खाद्य सुरक्षा प्रभावित होगी। अतिरिक्त 2.8 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे चले जाएंगे और 2050 तक वैश्विक निर्यात में 3.8 प्रतिशत की कमी आएगी। एएमआर का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है और विकासशील देशों में यह कहीं अधिक है। वर्ष 2019 में ही प्रतिरोधी रोगाणुओं की वजह से हुई बीमारियों के कारण 12 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। अनुमान है कि वर्ष 2019 में केवल भारत में ही एएमआर के कारण 2,97,000 मौतें हुईं वहीं इससे संबंधित जटिलताओं के चलते 10,42,500 मौतें हुईं। भारत में एएमआर से होने वाली मौतों की संख्या कैंसर, श्वसन-संक्रमण एवं तपेदिक, आंतों के संक्रमण, मधुमेह और गुर्दे की बीमारियों और मातृ एवं नवजात विकारों से होने वाली मौतों से अधिक है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने माना कि सतत? विकास लक्ष्यों की प्राप्ति पर इस स्थिति का प्रभाव पड़ेगा। 2016 और 2024 में अपनी उच्च स्तरीय बैठकों के माध्यम से, यूएनजीए ने 2019 को आधार वर्ष मानकर 2030 तक प्रतिरोधी रोगाणुओं के कारण होने वाली मृत्यु दर को 10 प्रतिशत तक कम करने के लिए तत्काल, वैश्विक रूप से समन्वित राष्ट्रीय कार्रवाई का आह्वान किया है। आर्थिक सहयोग के लिए अंतर-सरकारी मंचों की हाल की बैठकों, अर्थात? जी-20 (भारत, 2023) और जी-7 (इटली, 2024) बैठकों में एएमआर से निपटने के महत्व को दृढ़ता से व्यक्त किया गया है। पशु चिकित्सा क्षेत्र में भी संक्रमण का उपचार अथवा इसकी रोकथाम के लिए एंटीबायोटिक्स का उपयोग बड़े पैमाने पर होता है। कई बार इनका इस्तेमाल इस लक्ष्य के साथ किया जाता है कि इनके उपयोग से पशु के शरीर का आकार (मांस) बढ़ेगा, जिससे कि ज्यादा आर्थिक लाभ मिलेगा। अनेक देशों में रोक के बावजूद जागरूकता की कमी और गरीबी के कारण यह भारत में जारी है। पशुओं में एंटीबायोटिक्स का ऐसा अंधाधुंध उपयोग उनके अंदर प्रतिरोधी जीवाणुओं व रोगाणुओं के फैलाव को बढ़ावा देता है।

चंडीगढ़ के पीजीआईएमईआर द्वारा हाल ही में चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान और उत्तराखंड से आए दस्त के मरीजों के अध्ययन से पता चला है कि रोग की वजह ऐसे रोगाणु हैं जिन्होंने कई एंटीबायोटिक दवाओं के खिलाफ एएमआर विकसित कर ली।

भारत में मांसाहार की लगातार बढ़ती मांग के साथ पशुधन स्वास्थ्य क्षेत्र में एंटीबायोटिक का उपयोग और अधिक होता गया, लिहाजा खाद्य-शृंखला के जरिए उनमें बना एएमआर मनुष्यों में स्थानांतरित होता गया। जिससे कि उनके अंदर भी सिप्रोफ्लोसिन, एम्पीसिलीन, टेट्रासाइक्लिन और तीसरी पीढ़ी के सेफ्लोस्पोरिन के खिलाफ उन रोगाणुओं के विरुद्ध उच्च एएमआर बनता देखा जा रहा है। फलतः इलाज मुश्किल हो जाता है।

हालांकि, एएमआर की समस्या राजनीतिक, वित्तीय, कार्यक्रम संबंधी, तकनीकी, विनियामक और बहु-क्षेत्रीय रूप से ध्यान खींच रही है, लेकिन इसे रोकने के वैश्विक प्रयासों में जनता की भूमिका भी एक प्रमुख हितधारक के रूप में है। सभी क्षेत्रों के एंटीबायोटिक्स लिखकर देने वाले डॉक्टर और उपयोगकर्ताओं को एएमआर के छिपे खतरे को समझना चाहिए। किफायती एंटीबायोटिक दवाओं के अभाव में, एक छोटी-सी चोट भी घातक हो सकती है। बीमारियां जैसे कि टाइफाइड बुखार, हैजा, निमोनिया, मेनिन्जाइटिस आदि ठीक होना मुश्किल होता जाएगा। सर्जरी विफल होने का बहुत खतरा होगा। जीवन बचाने के नवीन चिकित्सा ढंग निष्फल हो सकते हैं।

एंटीबायोटिक उपयोगकर्ता को शिक्षित किया जाए कि प्रतिरोधी रोगाणु बनने पर वे कैसी मुसीबत ला सकते हैं। इस वैश्विक तबाही को कम करने में वे स्वयं कैसी भूमिका निभा सकते हैं। बिना डॉक्टर की लिखी पर्ची के एंटीबायोटिक्स खरीदना, तयशुदा खुराक और बताई अवधि तक एंटीबायोटिक्स न लेना, स्व-चिकित्सा करना, किसी भी बुखार के लिए बची हुई एंटीबायोटिक्स का उपयोग करना व्यक्ति के अपने स्वास्थ्य के साथ-साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य हेतु भी हानिकारक है। इसके लिए नियामक प्राधिकरणों द्वारा सतत? एवं साक्ष्य-आधारित प्रयास और केंद्रीय एवं राज्यों के स्वास्थ्य शिक्षा संस्थानों द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु व्यापक प्रयास जरूरी हैं।

विश्वविद्यालय, नागरिक समाज और गैर सरकारी संगठन इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। हमें एक राष्ट्रीय व्यापक जोखिम विस्तार एवं सामुदायिक सहभागिता रणनीति की आवश्यकता है, जो हमारी विविधता भरी आबादी के लिए व्यवहार्य हो, सामाजिक मिथकों को तोड़ने वाली और अनुभवी विशेषज्ञों के माध्यम से कार्यान्वित की जाए। केंद्र व राज्य सरकारों, को इस प्रयास में उचित निवेश करना चाहिए। लोगों की सक्रिय भागीदारी के बिना कोई भी सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम कभी सफल नहीं हुआ है। यह एएमआर नियंत्रण और दुनिया को एंटीबायोटिक असफल होने के बाद वाले भयानक युग से बचाएगी।

भारत में मांसाहार की लगातार बढ़ती मांग के साथ पशुधन स्वास्थ्य क्षेत्र में एंटीबायोटिक का उपयोग और अधिक होता गया, लिहाजा खाद्य-शृंखला के जरिए उनमें बना एएमआर मनुष्यों में स्थानांतरित होता गया। जिससे कि उनके अंदर भी सिप्रोफ्लोसिन, एम्पीसिलीन, टेट्रासाइक्लिन और तीसरी पीढ़ी के सेफ्लोस्पोरिन के खिलाफ उन रोगाणुओं के विरुद्ध उच्च एएमआर बनता देखा जा रहा है। फलतः इलाज मुश्किल हो जाता है।